एक नजर में

वैज्ञानिक विधि से मूंग की खेती करें किसान

कानपुर : सीएसए विवि के दलहन विज्ञानी डा. मनोज कटियार व डा. सर्वेंद्र गुप्ता ने किसानों को मूंग की वैज्ञानिक विधि से खेती करने की सलाह दी है। डा. सर्वेंद्र ने बताया कि मूंग की श्वेता, स्वाति, आजाद मूंग-एक (केएम-2342), विराट, सिखा व सम्राट प्रजातियां पूरे प्रदेश में बोई जाती हैं। बुवाई के लिए मार्च का महीना उचित रहता है। बीज की मात्रा 20 किग्रा प्रति हेक्टेयर होनी चाहिए। बोते समय पौधों के बीच दूरी 25 से 30 सेंटीमीटर और गहराई चार से पांच सेंटीमीटर रखें। जासं

लखनऊ

जागरण संवाददाता का
प्रदेश रणजी टीम के
और तेज गेंदबाज अ
को आइपीएल में नई
सुपरजाइंट्स ने 50 ल
लगाकर अपनी टीम
कर लिया है। शनिव
हुई खिलाड़ियों की न
में शहर से अंकित
में कामयाब रहे।
पहले केकेआर, पंज
राजस्थान रॉयल टीम
चुके हैं। शहर के ि
राजपूत के साथ ही च

Sign in to edit and save changes to this file.

जायद में मूंग की वैज्ञानिक खेती से किसानों को मिलेगा लाभ

मूंग में पौष्टिक तत्व प्रोटीन 22 से 24 प्रतिशत

कानपुर, 12 फरवरी। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ. डी.आर. सिंह के निर्देश के क्रम में आज दलहन वैज्ञानिक डॉ मनोज कटियार एवं डॉ सर्वेंद्र कुमार गुप्ता ने संयुक्त रूप से जायद में मूंग की वैज्ञानिक खेती विषय पर किसानों हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि उत्तर प्रदेश में जायद के अंतर्गत मूंग की खेती लगभग 42 हजार हेक्टेयर क्षेत्रफल में की जा रही है तथा प्रदेश में मूंग की औसत उत्पादकता 8 कुंतल प्रति हेक्टेयर से अधिक है। डॉ कटियार ने बताया कि मूंग में पौष्टिक तत्व प्रोटीन 22 से 24 प्रतिशत तथा एमिनो एसिडस लाइसिन (2.21-2.28 प्रतिशत), ट्रिप्टोफेन (0.90-0.93 प्रतिशत), हिस्टीडीन (5-7 प्रतिशत), अर्गीनीन (1.19-1.77 प्रतिशत) प्राप्त होते है तथा खनिज लवण जैसे- लोहा 105.8, कॉपर 4.8, मैग्नीशियम 48.6, सोडियम 382.6,पोटैशियम 11.6, कैल्शियम 359.2, ज़िंक 47.2 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम प्राप्त होते है। उन्होंने बताया कि मूंग दलहनी फसल होने के कारण इसकी जड़ों में राइजोबियम जीवाणु पाया जाता है। जो भूमि की उर्वरा शक्तिको बरकरार रखता है। डॉ सर्वेंद्र कुमार गुप्ता ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित मूंग की प्रजातियां श्वेता,स्वाति,आजाद मूंग -1(चरू-2342) किसानों में लोकप्रिय है। इसके अतिरिक्त विराट, शिखा एवं सम्राट प्रजातियां भी किसानों में लोकप्रिय है। जो संपूर्ण उत्तर प्रदेश के लिए संस्तुति है। डॉक्टर कटियार ने मूंग की बुवाई के लिए बताया कि मार्च के प्रथम पखवारा से मार्च के अंतिम पखवाड़ा तक उचित रहता है। उन्होंने बताया कि मूंग की बुवाई हेतु बीज की मात्रा 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर तथा उन्होंने बताया कि 25 से 30 सेंटीमीटर पौधे से पौधे की दूरी तथा कूंड में बुवाई करें तथा चार से पांच सेंटीमीटर गहराई पर बुवाई करें।उन्होंने किसान भाइयों से अनुरोध किया है कि बुवाई से पूर्व बीज को 2.5 ग्राम थीरम या कार्बेंडाजिम से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित एवं राइजोबियम कल्चर से शोधित करके बुवाई करें ।

वर्ष 16 अंक 43 पृष्ठ-8 मूल्य-1 रू0 कानपुर, रविवार 13 फरवरी 2022

कानपुर व औरैया से एक साथ प्रकाशित, लखनऊ, इलाहाबाद, बुंदेलखंड, फतेहपुर, इटावा, कन्नौज, मैनपुरी,ऐटा, हरदोई, उन्नाव,कानपुर देहात में प्रसारित

RNI N.UPHIN/2007/27090

दैनिक

नगर छाया

आप की आवाज़.....

www.nagarchhaya.com

पेज -7

कोलकाता नाइट राइडर्स ने श्रेयस अय्यर को 12.25 करो

जायद में मूंग की वैज्ञानिक खेती लाभकारी : डॉ. मनोज कटियार

कानपुर (नगर छाया समाचार)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ. डी.आर. सिंह के निर्देश के क्रम में आज दलहन वैज्ञानिक डॉ मनोज कटियार एवं डॉ सर्वेंद्र कुमार गुप्ता ने संयुक्त रूप से जायद में मूंग की वैज्ञानिक खेती विषय पर किसानों हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि उत्तर प्रदेश में जायद के अंतर्गत मूंग की खेती लगभग 42 हजार हेक्टेयर क्षेत्रफल में की जा रही है।तथा प्रदेश में मूंग की औसत उत्पादकता 8 कुंतल प्रति हेक्टेयर से अधिक है। डॉक्टर कटियार ने बताया कि मूंग में पौष्टिक तत्व प्रोटीन 22 से 24ग्र तथा एमिनो एसिडस लाइसिन (2.21-2.28 प्रतिशत),ट्रिप्टोफेन (0.90-0.93प्रतिशतअ), हिस्टीडीन (5-7प्रतिशत), अग्रीनींन (1.19-1.77प्रतिशत) प्राप्त होते हैं। तथा खनिज लवण जैसे- लोहा 105.8, कॉपर 4.8, मैग्नीशियम 48.6, सोडियम 382.6,पोटैशियम 11.6, कैल्शियम 359.2, जिंक 47.2 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम प्राप्त होते है। उन्होंने बताया कि मूंग दलहनी फसल होने के कारण इसकी जड़ों में राइजोबियम जीवाणु पाया जाता है। जो भूमि की उर्वरा शक्तिको बरकरार रखता है। डॉ सर्वेंद्र कुमार गुप्ता ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित मूंग की प्रजातियां श्वेता,स्वाति,आजाद मूंग -1(चरू-2342) किसानों में लोकप्रिय है। इसके अतिरिक्त विराट, सिखा एवं सम्राट प्रजातियां भी किसानों में लोकप्रिय हैं। जो संपूर्ण उत्तर प्रदेश के लिए संस्तुति है। डॉक्टर कटियार ने मूंग की बुवाई के लिए बताया कि मार्च के प्रथम पखवारा से मार्च के अंतिम पखवाड़ा तक उचित रहता है। उन्होंने बताया कि मूंग की बुवाई हेतु बीज की मात्रा 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर तथा उन्होंने बताया कि 25 से 30 सेंटीमीटर पौधे से पौधे की दूरी तथा कूंड में बुवाई करें तथा चार से पांच सेंटीमीटर गहराई पर बुवाई करें।उन्होंने किसान भाइयों से अनुरोध किया है कि बुवाई से पूर्व बीज को 2.5 ग्राम थीरम या कार्बेंडाजिम से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित एवं राइजोबियम कल्चर से शोधित करके बुवाई करें । उन्होंने कहा कि किसान भाई मूंग की बुवाई हेतु ध्यान रखें कि भूमि में पर्याप्त नमी है। तथा कीट पतंगों का प्रभाव बुवाई के 30 से 40 दिन बाद होता है। किसान भाई मूंग की फसल की निगरानी करते रहे तथा प्रभावी कीटनाशक का छिड़काव करें।

Sign in to edit and save changes to this file.

अंक-344 कानपुर, रविवार 13 फरवरी 2022 पृष्ठ-8

दैनिक

आज का कानपुर

मूंग की बुवाई प्रथम पखवारा से मार्च के अंतिम पखवाड़ा तक उचित - डॉ कटियार

आज का कानपुर

कानपुर।सीएसए के कुलपति डॉ. डी.आर. सिंह के निर्देश के क्रम में आज दलहन वैज्ञानिक डॉ मनोज कटियार एवं डॉ सर्वेंद्र कुमार गुप्ता ने संयुक्त रूप से जायद में मूंग की वैज्ञानिक खेती विषय पर किसानों हेतु एडवाइजरी जारी की है उन्होंने बताया कि उत्तर प्रदेश में जायद के अंतर्गत मूंग की खेती लगभग 42 हजार हेक्टेयर क्षेत्रफल में की जा रही है।तथा प्रदेश में मूंग की औसत उत्पादकता 8 कुंतल प्रति हेक्टेयर से अधिक है डॉक्टर कटियार ने बताया कि मूंग में पौष्टिक तत्व प्रोटीन 22 से 24ब्र तथा एमिनो एसिडस लाइसिन (2.21-2.28ब्र), ट्रिप्टोफेन (0.90-0.93ब्र), हिस्टीडीन (5-7ब्र), अग्रीनींन (1.19-1.77ब्र) प्राप्त होते हैं। तथा खनिज लवण जैसे- लोहा 105.8, कॉपर 4.8, मैग्नीशियम 48.6, सोडियम 382.6, पोटैशियम 11.6, कैल्शियम 359.2, ज़िंक 47.2 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम प्राप्त होते है उन्होंने बताया कि मूंग दलहनी फसल होने के कारण इसकी जड़ों में राइजोबियम जीवाणु पाया जाता है जो भूमि की उर्वरा शक्ति को बरकरार रखता है डॉ सर्वेंद्र कुमार गुप्ता ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित मूंग की प्रजातियां श्वेता,स्वाति,आजाद मूंग - 1(चरू-2342) किसानों में लोकप्रिय है इसके अतिरिक्त विराट, सिखा एवं सम्राट प्रजातियां भी किसानों में लोकप्रिय हैं जो संपूर्ण उत्तर प्रदेश के लिए संस्तुति है डॉक्टर कटियार ने मूंग की बुवाई के लिए बताया कि मार्च के प्रथम पखवारा से मार्च के अंतिम पखवाड़ा तक उचित रहता है उन्होंने बताया कि मूंग की बुवाई हेतु बीज की मात्रा 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर तथा उन्होंने बताया कि 25 से 30 सेंटीमीटर पौधे से पौधे की दूरी तथा कूंड में बुवाई करें तथा चार से पांच सेंटीमीटर गहराई पर बुवाई करें उन्होंने किसान भाइयों से अनुरोध किया है कि बुवाई से पूर्व बीज को 2.5 ग्राम थीरम या कार्बेंडाजिम से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित एवं राइजोबियम कल्चर से शोधित करके बुवाई करें उन्होंने कहा कि किसान भाई मूंग की बुवाई हेतु ध्यान रखें कि भूमि में पर्याप्त नमी है तथा कीट पतंगों का प्रभाव बुवाई के 30 से 40 दिन बाद होता है किसान भाई मूंग की फसल की निगरानी करते रहे तथा प्रभावी कीटनाशक का छिड़काव करें।

उत्तराखंड/उत्तर प्रदेश का प्रथम द्विभाषीय (हिन्दी-अंग्रेजी) सांध्य दैनिक समाचार पत्र

जनमत टुडे

वर्ष:13 | अंक:21 | देहरादून, शनिवार , 12 फरवरी, 2022 | पृष्ठ:08

जायद में मूंग की वैज्ञानिक खेती लाभकारी

अनिल मिश्रा (जनमत टुडे)

कानपुरः चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ. डी.आर. सिंह के निर्देश के क्रम में दलहन वैज्ञानिक डॉ मनोज कटियार एवं डॉ सर्वेंद्र कुमार गुप्ता ने संयुक्त रूप से जायद में मूंग की वैज्ञानिक खेती विषय पर किसानों हेतु एडवाइजरी जारी की है उन्होंने बताया कि उत्तर प्रदेश में जायद के अंतर्गत मूंग की खेती लगभग 42 हजार हेक्टेयर क्षेत्रफल में की जा रही है तथा प्रदेश में मूंग की औसत उत्पादकता 8 कुंतल प्रति हेक्टेयर से अधिक है डॉक्टर कटियार ने बताया कि मूंग में पौष्टिक तत्व प्रोटीन 22 से 24% तथा एमिनो एसिडस लाइसिन (2.21–2.28%), ट्रिप्टोफेन (0.90–0.93%), हिस्टीडीन (5–7%), अग्रीनींन (1.19–1.77%) प्राप्त होते हैं तथा खनिज लवण जैसे– लोहा 105.8, कॉपर 4.8, मैग्नीशियम 48.6, सोडियम 382.6, पोटैशियम 11.6, कैल्शियम 359.2, जिंक 47.2 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम प्राप्त होते है। उन्होंने बताया कि मूंग दलहनी फसल होने के कारण इसकी जड़ों में राइजोबियम जीवाणु पाया जाता है जो भूमि की उर्वरा शक्ति को बरकरार रखता है डॉ सर्वेंद्र कुमार गुप्ता ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित मूंग की प्रजातियां श्वेता, स्वाति, आजाद मूंग–1 (KM–2342) किसानों में लोकप्रिय है इसके अतिरिक्त विराट, सिखा एवं सम्राट प्रजातियां भी किसानों में लोकप्रिय हैं जो संपूर्ण उत्तर प्रदेश के लिए संस्तुति है डॉक्टर कटियार ने मूंग की बुवाई के लिए बताया कि मार्च के प्रथम पखवारा से मार्च के अंतिम पखवाड़ा तक उचित रहता है उन्होंने बताया कि मूंग की बुवाई हेतु बीज की मात्रा 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर तथा उन्होंने बताया कि 25 से 30 सेंटीमीटर पौधे से पौधे की दूरी तथा कूंड में बुवाई करें तथा चार से पांच सेंटीमीटर गहराई पर बुवाई करें। उन्होंने किसान भाइयों से अनुरोध किया है कि बुवाई से पूर्व बीज को 2.5 ग्राम थीरम या कार्बेंडाजिम से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित एवं राइजोबियम कल्चर से शोधित करके बुवाई करें उन्होंने कहा कि किसान भाई मूंग की बुवाई हेतु ध्यान रखें कि भूमि में पर्याप्त नमी है तथा कीट पतंगों का प्रभाव बुवाई के 30 से 40 दिन बाद होता है किसान भाई मूंग की फसल की निगरानी करते रहे।

Sign in to edit and save changes to this file.

देश-विदेश | लखनऊ और देहरादून से प्रकाशित राष्ट्रीय हिंदी दैनिक | उत्तर प्रदेश

हिजाब को लेकर सीएम धामी का बयान... 12

सूदखोर के आतंक से तंग आकर व्यापारी ने की... 10

जन एक्सप्रेस

लखनऊ
वर्ष: 13 | अंक: 122
मूल्य: ₹3.00/-
पेज : 12

@janexpressnews janexpresslive janexpresslive www.janexpresslive.com/epaper

लखनऊ | रविवार | 13 फरवरी, 2022

जायद में मूंग की खेती किसानों के लिए लाभकारीः डा. मनोज कटियार

जन एक्सप्रेस। कानपुर नगर

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डा. डी.आर. सिंह के निर्देश के क्रम में शनिवार को दलहन वैज्ञानिक डॉ मनोज कटियार एवं डॉ सर्वेंद्र कुमार गुप्ता ने संयुक्त रूप से जायद में मूंग की वैज्ञानिक खेती विषय पर किसानों को सलाह दी।

डॉक्टर कटियार ने बताया कि उत्तर प्रदेश में जायद के अंतर्गत मूंग की खेती लगभग 42 हजार हेक्टेयर क्षेत्रफल में की जा रही है। प्रदेश में मूंग की औसत उत्पादकता 8 कुंतल प्रति हेक्टेयर से अधिक है। उन्होंने बताया कि मूंग में पौष्टिक तत्व प्रोटीन 22 से 24 प्रतिशत तथा एमिनो एसिड्स लाइसिन (2.21-2.28 प्रतिशत), ट्रिप्टोफेन (0.90-0.93 प्रतिशत), हिस्टीडीन (5-7 प्रतिशत), अग्रीनींन (1.19-1.77 प्रतिशत) प्राप्त होते हैं। तथा खनिज लवण जैसे- लोहा 105.8, कॉपर 4.8, मैग्नीशियम 48.6, सोडियम 382.6, पोटैशियम 11.6, कैल्शियम 359.2, जिंक 47.2 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम प्राप्त होते है। बताया कि मूंग दलहनी फसल होने के कारण इसकी जड़ों में राइजोबियम जीवाणु पाया जाता है। जो भूमि की उर्वरा शक्ति को बरकरार रखता है। डा. कटियार ने मूंग की बुवाई के लिए बताया कि मार्च के प्रथम पखवारा से मार्च के अंतिम पखवारा तक उचित रहता है। उन्होंने बताया कि मूंग की बुवाई के लिए बीज की मात्रा 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर तथा 25 से 30 सेंटीमीटर पौधे से पौधे की दूरी तथा कूंड में बुवाई करें तथा चार से पांच सेंटीमीटर गहराई पर बुवाई करें। उन्होंने किसान भाइयों से अनुरोध किया है कि बुवाई से पूर्व बीज को 2.5 ग्राम थीरम या कार्बेंडाजिम से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित एवं राइजोबियम कल्चर से शोधित करके बुवाई करें। उन्होंने कहा कि किसान भाई मूंग की बुवाई के लिए ध्यान रखें कि भूमि में पर्याप्त नमी है तथा कीट पतंगों का प्रभाव बुवाई के 30 से 40 दिन बाद होता है। किसान भाई मूंग की फसल की निगरानी करते रहे तथा प्रभावी कीटनाशक का छिड़काव करें। डा. सर्वेंद्र कुमार गुप्ता ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित मूंग की प्रजातियां श्वेता,स्वाति,आजाद मूंग -1(केएम-2342) किसानों में लोकप्रिय है। इसके अतिरिक्त विराट, सिखा एवं सम्राट प्रजातियां भी किसानों में लोकप्रिय हैं। जो संपूर्ण उत्तर प्रदेश के लिए संस्तुति है।